21-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

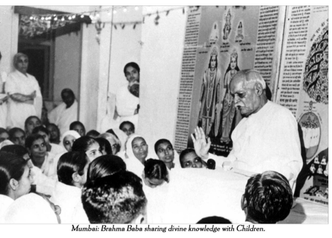

“मीठे बच्चे - अभी तक तुम सुनी सुनाई बातों पर चलते आये, अब बाप तुम्हें डायरेक्ट सुनाकर आपसमान नॉलेजफुल बनाते हैं"

चढ़ाओ नशा...

वाह रे मैं...

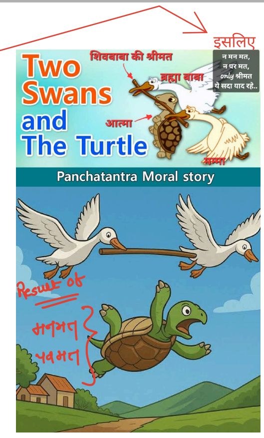

प्रश्नः- अच्छे पुरुषार्थी बच्चों की निशानी तथा उनकी अवस्था का गायन क्या है?

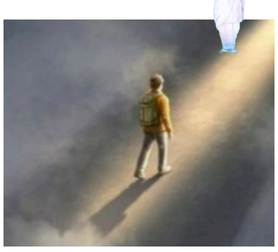

उत्तर:- अच्छे पुरुषार्थी बच्चे - मदर, फादर को पूरा-पूरा फालो करेंगे। अपनी जीवन पर तरस खायेंगे। पूरा-पूरा अटेन्शन रखेंगे। थोड़ा भी समय निकाल बाबा की याद में जरूर बैठेंगे। उनकी अवस्था का गायन है - अचल, अडोल, स्थिर। उन्हें ही महावीर कहा जाता है।

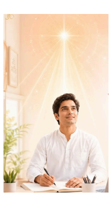

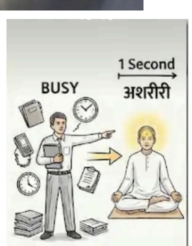

गीत:- भोलेनाथ से निराला... Click

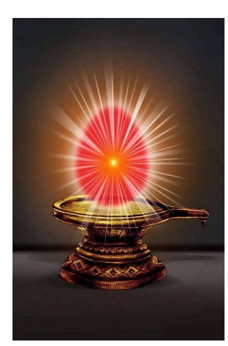

भोले नाथ से निराला, गौरी नाथ से निराला
कोई और नहीं
ओ भोले नाथ से निराला, गौरी नाथ से निराला
कोई और नहीं
ऐसा बिगड़ी बनाने वाला कोई और नहीं
भोले नाथ से निराला, गौरी नाथ से निराला
कोई और नहीं
ओ भोले नाथ से निराला, गौरी नाथ से निराला
कोई और नहीं

उनका डमरू डम डम बोले
अगमन गम के भेद खोले
उनका डमरू डम डम बोले
अगमन गम के भेद खोले
ऐसा भक्तों का रखवाला
कोई और नहीं
भोले नाथ से निराला, गौरी नाथ से निराला
कोई और नहीं
ओ भोले नाथ से निराला, गौरी नाथ से निराला
कोई और नहीं

काया जब जब करवट बदले
पाप चमकते अगले पिछले
काया जब जब करवट बदले
पाप चमकते अगले पिछले
ऐसा जोग जगाने वाला कोई और नहीं
भोले नाथ से निराला, गौरी नाथ से निराला
कोई और नहीं
ओ भोले नाथ से निराला, गौरी नाथ से निराला
कोई और नहीं

तुमने जग का कष्ट मिटाया
मुझको स्वामी क्यों बिसराया
तुमने जग का कष्ट मिटाया
मुझको स्वामी क्यों बिसराया
अब तो मुझे बचाने वाला
कोई और नहीं
भोले नाथ से निराला, गौरी नाथ से निराला
कोई और नहीं
ओ भोले नाथ से निराला, गौरी नाथ से निराला
कोई और नहीं

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

21-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

सोचो तुमको कौन मिला है, कौन तुम्हारा साथी है।

चढ़ाओ नशा...

ओम् शान्ति। भक्ति मार्ग में दुनिया सिर्फ गाती है। तुम बच्चे अभी समझते हो - भक्ति मार्ग में हम भी गाते थे। अब वही भोलानाथ सम्मुख है, भोलानाथ अक्षर भक्ति मार्ग का है। ज्ञान मार्ग का अक्षर है शिवबाबा। तुम समझते हो अनादि बने बनाये ड्रामा-प्लैन अनुसार अब संगमयुग पर बाप को आकर हमसे यह पुरुषार्थ कराना ही है। कल्प-कल्प पुरुषार्थ कराते आये हैं। कितना समय तुम बच्चों ने भक्ति की है, यह भी सिद्धकर बतलाते हैं।

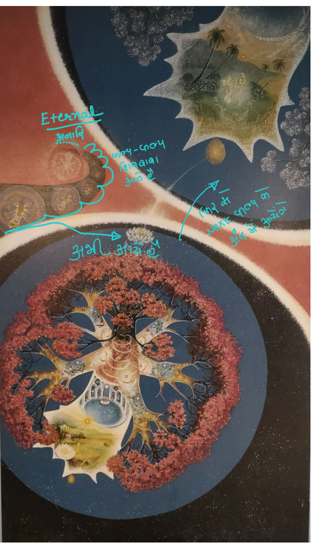

ये पक्का समझ लो..

जिन्होंने पहले-पहले भक्ति शुरू की है वही आकर ज्ञान लेंगे और फिर सूर्यवंशी बनेंगे। सतयुग में सिर्फ एक लक्ष्मी-नारायण तो नहीं आते। उनकी डिनायस्टी भी है ना। उसको कहा जाता है दैवी वर्ण। भारत में दैवी वर्ण था। अब आसुरी वर्ण है। यह है संगम। अब आसुरी से दैवी वर्ण में जाना है। बरोबर यह महाभारत लड़ाई भी वही है जो गाई हुई है। सिर्फ नाम शिव के बदले श्रीकृष्ण का डाल दिया है। एक गीता खण्डन हुई तो सब शास्त्र खण्डन हो जाते हैं। मूल बात गीता की है। गीता पाठशालायें वा गीता भवन कितने हैं! गीता ज्ञान

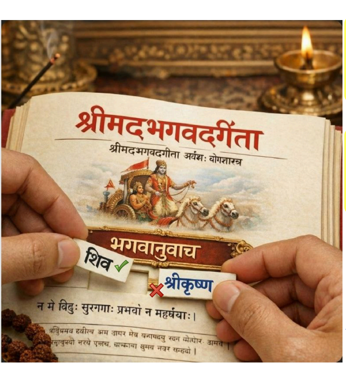

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

सुनने की पाठशाला। खुद सुनाने वाला है नहीं। जो होकर जाते हैं वह फिर गायन चलता है। बच्चों को तो रोज़ बाप बहुत प्यार से समझाते हैं। बच्चे जानते हैं - बाबा प्यार का सागर है। सबको प्यार से सिखलाते हैं। बाबा कभी गुस्सा नहीं करते, सदैव प्यार से समझाते हैं। बच्चे तुम सतोप्रधान थे फिर पुनर्जन्म लेते आये हो। तुम भारतवासी ही असुल देवी-देवता धर्म के हो। यह भी बतलाते हैं। पहले-पहले वर्सा लेने कौन आयेंगे? जिन्होंने कल्प पहले लिया है, वही कहेंगे बाबा आपके सिवाए हमारा सहायक और कोई नहीं। बाप क्षमा भी तब करेंगे जब संगमयुग होगा। यह तो बच्चे जानते हैं कि रावण राज्य और रामराज्य यहाँ ही होता है। Simple Logic रावणराज्य है तब तो रामराज्य चाहते हैं। तुम जब शिवबाबा कहते हो तो बुद्धि निराकार तरफ ही जाती है। निराकार ही याद आता है। आत्मा ही बाप को पुकारती है। ऐसे भी नहीं कि परमात्मा कोई बैठ सुनते हैं। बाप समझाते हैं ड्रामा प्लैन अनुसार पतितों को पावन बनाने के लिए तो मैं शरीर में आता हूँ। ऐसे नहीं कि पुकार सुनकर

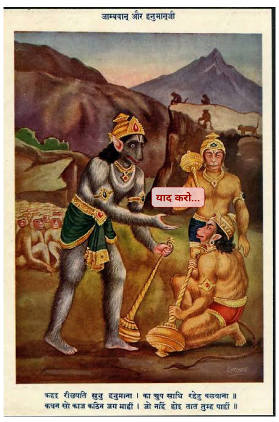

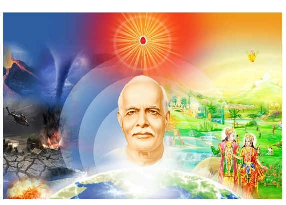

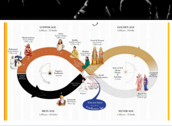

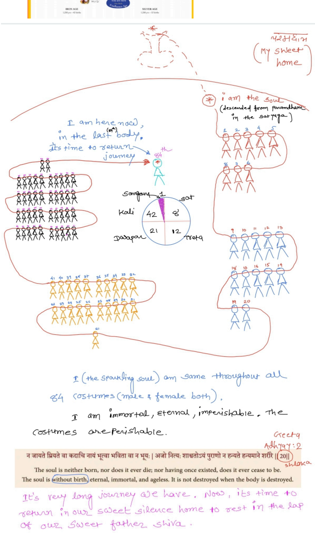

आता हूँ। भक्ति जब पूरी होती है तब मुझे आना ही है। यह समझने की बातें हैं। वह समय आता है, बच्चे पुकारने लगते हैं। यह तो कहाँ लिखा हुआ नहीं है कि कब आयेंगे? उन्होंने कल्प की आयु रांग लिख दी है। यह चित्र घर-घर में होने चाहिए। जो रोज़ देखें और याद करें कि यह बाबा, यह दादा, यह वर्सा। बाप कहते हैं बच्चे सतोप्रधान बनने के लिए मुझे याद करो तो खाद निकल जायेगी। यह युक्ति बाप ही समझाते हैं। यह बाप भी कहते हैं मैं भी पुरुषार्थ करता हूँ। बच्चे एक दो को सावधान कर उन्नति को पाना है। यह चित्रों की समझानी बहुत अच्छी है। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा स्थापना कर रहे हैं। सामने महाभारी महाभारत लड़ाई खड़ी है। इतने अनेक धर्म विनाश होंगे, उसके लिए लड़ाई जरूर चाहिए। यह बातें बच्चों को भूलनी नहीं चाहिए। बरोबर अब कलियुग घोर अन्धियारा है। कितने ढेर मनुष्य हैं, जरूर विनाश होना है। सतयुग में एक धर्म होगा। जरूर 84 जन्म का चक्र भी उन्होंने ही लगाया है। यह तो सहज है। बाकी इतने सब धर्मों का जरूर विनाश होगा। फिर एक

21-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

धर्म की स्थापना बरोबर हो रही है। सर्व का सद्गति दाता बाप है। बाप से ही बच्चों को वर्सा मिलता है।

बच्चे जानते हैं - हम जो यह पढ़ाई पढ़ते हैं वह भविष्य 21 जन्मों के लिए पढ़ते हैं। भगवानुवाच - मैं तुमको पढ़ाकर 21 जन्मों के लिए स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ। सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी घराने की बरोबर स्थापना होती है।

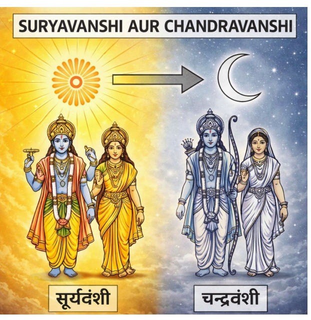

जो जितना पुरुषार्थ करेगा, उतना ऊंच पद पायेगा, तो शिवबाबा कहते हैं इन मदर-फादर को फालो करो। इन्हों को सूक्ष्मवतन, वैकुण्ठ में भी देखते हो। अपने को भी देखते हो, हम भी महाराजा, महारानी बनते हैं।

मदर फादर

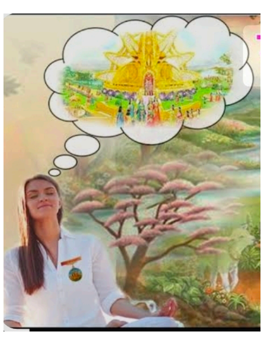

वैकुण्ठ का भी साक्षात्कार होता है। मानते भी हैं बरोबर भारत वैकुण्ठ था, श्रीकृष्णपुरी थी। आज कंसपुरी है, कल कृष्णपुरी होगी। रात बदल दिन होना है। यह है आधाकल्प बेहद का दिन और आधाकल्प बेहद की रात। अन्धियारे में ठोकरें ही खाते रहते हैं।

ब्रह्मा की रात सो ब्राह्मणों की रात। फिर तुम ब्राह्मण से देवता बनते हो। सतयुग में ब्राह्मण होते नहीं, देवता होते हैं।

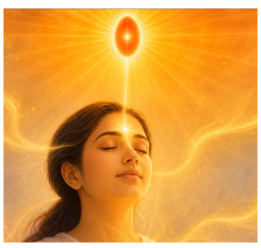

मेरे बाबा मुजे लेने आये है...

हो गई है शाम चलो लौट चले घर....

Point to be Noted

यह भी बच्चे जानते हैं भारत पवित्र राजस्थान था फिर अपवित्र राजस्थान बना है। भारत सदैव राजस्थान रहा है। राजाई चलती आती है और धर्म वालों की शुरू से ही राजाई नहीं चलती है। भगवान ही राजाई स्थापन करते हैं। भगवान ही आकर राजयोग सिखलाते हैं। वह है निराकार ज्ञान का सागर, सुख का सागर... तुम जानते हो बाबा से हमको वर्सा मिल रहा है। जरूर हमारे पुरुषार्थ की देरी है। जितना जो पुरुषार्थ करेंगे, जितना रास्ता बतायेंगे। बाप कहते हैं - मुझ बाप को याद करो तो तुम पतित से पावन बन पावन दुनिया के मालिक बन जायेंगे, कितना सहज है। लौकिक माँ बाप ज्ञान में अगर हैं तो बच्चों को भी आप समान बनाना पड़े। मां बाप सच्ची कमाई करते हैं तो बच्चों को सच्ची कमाई करानी चाहिए। कोई-कोई बच्चे अच्छे होते हैं। कहते हैं हम रूहानी पढ़ाई पढ़कर घर-घर में यह पैगाम देते रहेंगे। बाप भी कहते हैं कि पैगम्बर और मैसेन्जर मैं हूँ, तुमको मैसेज देता हूँ कि घर चलो और धर्म स्थापक तो

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

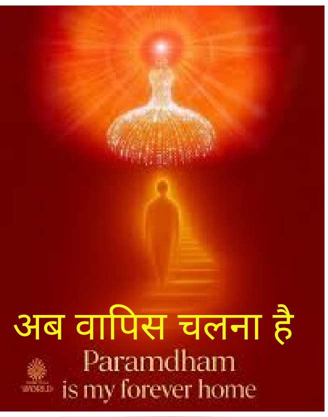

सिर्फ आकर अपना-अपना धर्म स्थापन करते हैं। मैं सबको मैसेज देता हूँ कि अब वापिस चलना है। यह दुनिया अब रहने के लायक नहीं है। मुझे याद करो तो पावन बन जायेंगे। तुम पावन थे फिर रावण ने पतित बनाया है। मैं फिर पावन बनाने आया हूँ। थोड़े समय में ही यह बाम्बस आदि चलेंगे तो समझेंगे यह वही महाभारत लड़ाई है। तो जरूर भगवान भी होगा। परन्तु वह समझते हैं गीता का भगवान श्रीकृष्ण है। कितनी मूँझ है। मूँझे नहीं होते तो भगवान को आने की क्या दरकार। भक्ति मार्ग को भूल-भुलैया का खेल कहा जाता है। अब बाप कहते हैं मुझे याद करने से सब भूलें खत्म हो जायेंगी। आगे अपने को देह समझते थे। अब अपने को देही समझते हो। यह सावधानी बाप ही देते हैं कि बच्चों देही-अभिमानी बनो। यहाँ तुम बाप के सम्मुख बैठे हो। वहाँ सेन्टर्स पर बच्चियाँ बैठ समझायेंगी कि शिवबाबा ऐसे कहते हैं। यहाँ तो डायरेक्ट बाप कहते हैं मैं आत्माओं से बैठ बात करता हूँ। तुम बच्चे जानते हो बाबा इन द्वारा हमको समझा रहे हैं। यह बड़ा कल्याणकारी मेला

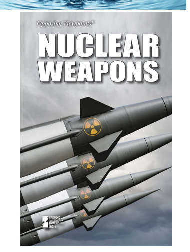

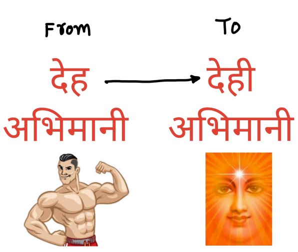

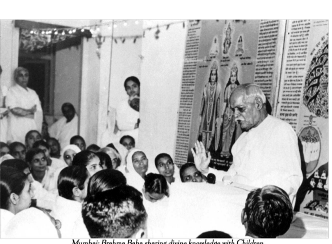

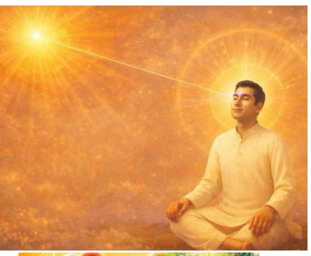

निरंतर का अर्थ है - सदा चलनेवाला।
निरन्तर का संधि विच्छेद नि: + अन्तर होता है।

21-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

है। बाप कहते हैं निरन्तर मुझे याद करो। बाबा से हमको स्वर्ग का वर्सा लेना है। बाप और स्वर्ग को याद करना है। कोई भी विकर्म नहीं करना है।

Attention..!

अगर विकर्म करेंगे तो सौगुणा बन जायेगा। विकर्म कराने वाली है माया, उस पर जीत पानी है इसलिए हनुमान महावीर की कथा है। तुम हनुमान

हाँ जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

महावीर हो ना। हम तो बाबा के बन गये। माया से हार नहीं सकते। तो बाबा को याद करते-करते

Attention Please..!

सतोप्रधान, विकर्माजीत बन जायेंगे। नहीं बनेंगे तो अपना पद भ्रष्ट करेंगे। पुरुषार्थी बच्चे जो होते हैं वह अपनी जीवन पर तरस खाते हैं।

At any cost...

कुछ भी हो जाए, याद की यात्रा में रहेंगे, अचल-अडोल-स्थिर रहेंगे।

As Certain as Death

विनाश तो होना ही है। सबके काका, चाचा, मामा, गुरू, गोसाई आदि सब खत्म हो जाते हैं। सतगुरू कहते हैं मैं तुमको साथ ले जाने वाला हूँ। मनुष्य तो बिल्कुल अन्धियारे में है, तुम जानते हो शिवबाबा हमको साथ ले जायेंगे। कहते हैं ना - काल खा गया। परन्तु मैं तो तुमको शान्तिधाम में ले जाता हूँ। आत्मा शरीर छोड़ चली जाती है। काल नहीं ले जाते हैं, आत्मा को निकलना होता

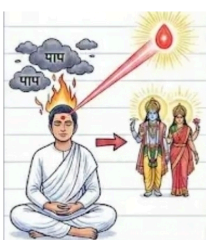

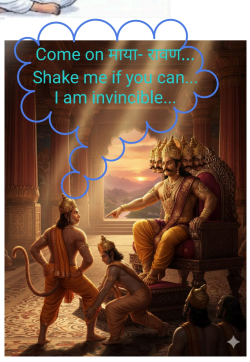

मेरे बाबा मुजे लेने आये है...

हो गई है शाम चलो लौट चले घर....

nts: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

21-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

है। अब तो मैं खुद आया हूँ - तुमको वापिस ले जाने। बाबा कोई मारने आया है क्या? नहीं। तुमको पुराना शरीर छोड़ना है। आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान होनी है। अब 5 तत्व भी तमोप्रधान हैं, इसलिए शरीर भी ऐसे बनते हैं। वहाँ सतोप्रधान तत्वों से तुम्हारे शरीर भी गोरे बनेंगे।

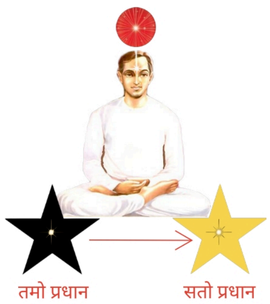

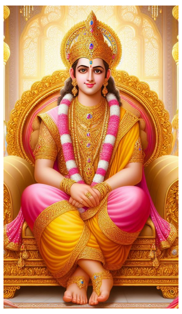

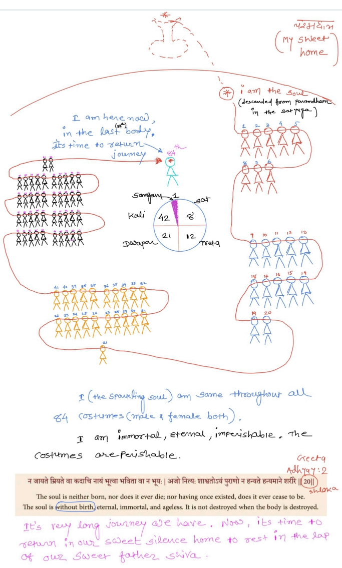

बाप कहते हैं मैं फिर से सतयुगी आदि सनातन देवी-देवता धर्म स्थापन करता हूँ। तुमने ही 84 जन्म भोगे हैं। तुम अपने धर्म को भूल गये हो और कोई अपने धर्म को भूले नहीं हैं। तुम अभी जानते हो हम असुल में देवी-देवता धर्म वाले इतने ऊंच से फिर नीच कैसे बने हैं। बाप बैठ कल्प-कल्प तुमको ही समझाते हैं। तुम फिर औरों को समझाते रहेंगे। अब 84 का चक्र पूरा होता है, विनाश सामने खड़ा है। स्वर्ग का मालिक बनने के लिए अपने को लायक बनाना है। वह बनना है याद से। सुबह को उठ बाबा को याद करो। बाबा वन्डर है - आप कैसे

याद करो...

चढ़ाओ नशा...

How lucky and Great we are...!

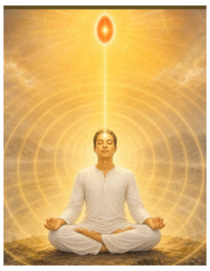

धारणा सेवा M.imp.

रूह - रूहान

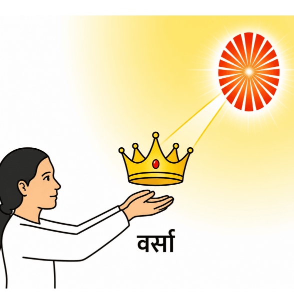

बहुत ढूंढने के बाद मिले हो मेरे बाबा..
अब आप को जो पा लिया है तो हमें
और कुछ भी नहीं चाहिए मीठे बाबा...
जो भी पाना था वो सब कुछ पा लीया है
मेरे प्राण बाबा...

आते हो। कैसे आप सम्मुख बात कर रहे हो। वह है सुनी सुनाई भक्ति मार्ग की बातें। अब तो हम आत्माओं को आप बाप मिले हो, आत्मा को बाप मिलता है तो उस प्यार में आकर मिलते हैं। बच्चे बाप के साथ बहुत प्यार से मिलते हैं। यहाँ तो वह निराकार बाप है गुप्त इसलिए बाबा हमेशा कहते हैं इनसे मिलते हो तो शिवबाबा को याद कर मिलो। मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते हैं। तुम्हारे में भी जो कोई जानते हैं, मेरा बनकर फिर भूल जाते हैं। देह-अभिमान में आ जाते हैं। प्रतिज्ञा भी करते हैं - बाबा मैं आपका हो चुका हूँ। मेल, चाहे फीमेल, दोनों की आत्मा कहती है। परन्तु शरीर में है तो मेल कहता है - आपका बन चुका हूँ। फिमेल कहेगी - मैं बन चुकी हूँ। बाबा हम आपसे पूरा वर्सा लेंगे। पूरा याद करेंगे। याद बिगर कट निकल नहीं सकती, तमोप्रधान से सतोप्रधान बन नहीं सकते। सतयुग में तुमको अखण्ड अटल, सुख-शान्ति, सम्पत्ति का 21 जन्म राज्य मिलता है। स्वर्ग का रचयिता बाप जरूर अपना वर्सा देंगे। गाते भी हैं परवाह है पार ब्रह्म में रहने वाले

How lucky and Great we are...!

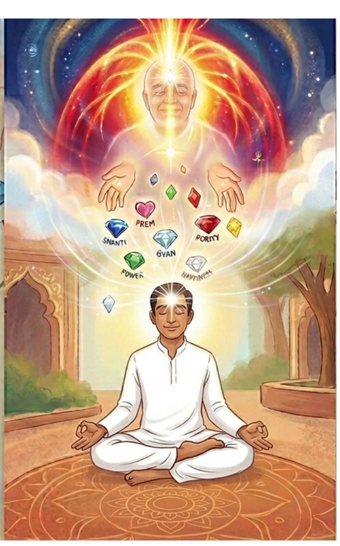

परमपिता परमात्मा की। वह तो एक ही बार आते हैं। यह भी समझने की बातें हैं ना। कई तो समझते ही नहीं, आगे चल आंख खुलेगी। थोड़ी बड़ी लड़ाई लगे। वास्तव में यह यज्ञ रचा हुआ है। लड़ाई भी है। इस यज्ञ का किसको पता ही नहीं है। रूद्र ज्ञान यज्ञ रचा ही था कि विनाश हो। वह फिर यज्ञ रचते हैं कि विनाश न हो, शान्ति हो जाए। यह यज्ञ फिर भी रचेंगे। उनको यह पता नहीं है कि विनाश होगा फिर क्या रहेगा? अभी तुम बच्चे सारे विश्व के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो। सबकी बेहद की जन्म कहानी को जानते हो। ऐसे कोई नहीं, जो कहे कि परमपिता परमात्मा की हम जीवन कहानी बताते हैं। परमात्मा को ही सब बुलाते हैं ना। घड़ी-घड़ी याद करते हैं। कहते हैं ना - भगवान ने यह बच्चा दिया, यह किया। कोई-कोई यह समझते हैं - जिसकी वस्तु थी, उसने ले ली। ऐसे भी कोई समझदार पुरुष होते हैं। अनेक प्रकार के मनुष्य हैं। अब तुमको बाप मिला है तो बाप को ही याद करना है। याद से ही कमाई होती है। तुम विष्णुपुरी के मालिक बन जायेंगे। तुम सतयुग से लेकर

चढ़ाओ नशा... How lucky and Great we are...!

21-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

Point to ponder deeply...

Point to be Noted

Come on.. Shake me, If you Can..

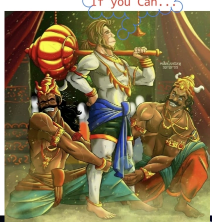

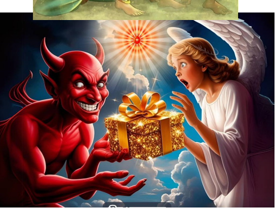

कलियुग अन्त तक सारे चक्र को जानते हो। तुम्हारी बुद्धि में हूबहू ऐसा है, जैसे बाप की बुद्धि में है इसलिए उनको ज्ञान का सागर, नॉलेजफुल कहा जाता है। अभी तुम बाप से वर्सा ले रहे हो। तुम बच्चों को अचल स्थिर रहना चाहिए। ऐसे नहीं कि माया घड़ी-घड़ी आकर डोलायमान करे। शर्मबूटी (छुईमुई) नहीं बनना चाहिए। बाप को याद नहीं करने से मुरझा जाते हैं। बाप को याद करने का पुरुषार्थ तुम कर रहे हो। समय नजदीक आयेगा, फिर तुम देखेंगे हमारा पुरुषार्थ अब पूरा हुआ। अन्त आ गई। अच्छा!

Coming soon...

Are you ready?

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

21-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

धारणा के लिए मुख्य सार:-

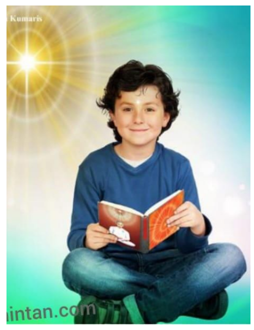

1) रूहानी पढ़ाई पढ़कर सच्ची कमाई करनी और करानी है। 'घर चलने का मैसेज' सबको देना है। अब कोई भी विकर्म नहीं करना है।

m.m.m....imp.

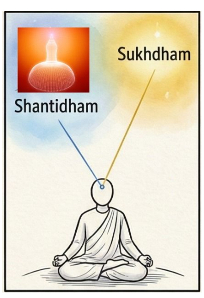

2) सवेरे उठकर प्यार से बाप को याद करना है। छोटी-मोटी बातों में छुईमुई नहीं बनना है। अवस्था को अचल-अडोल बनाना है।

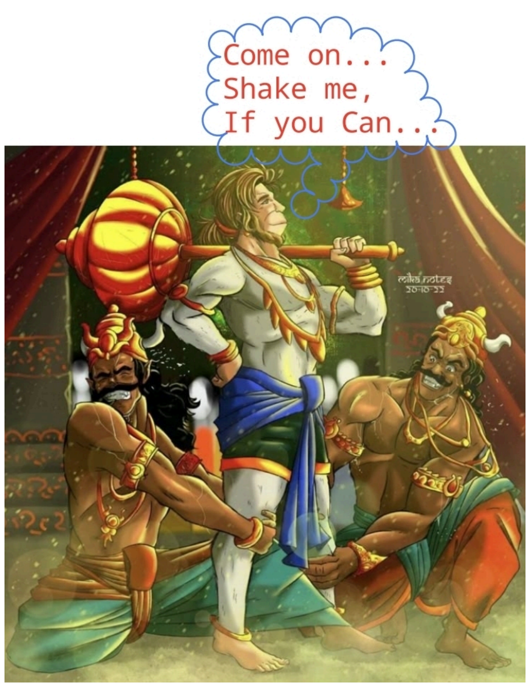

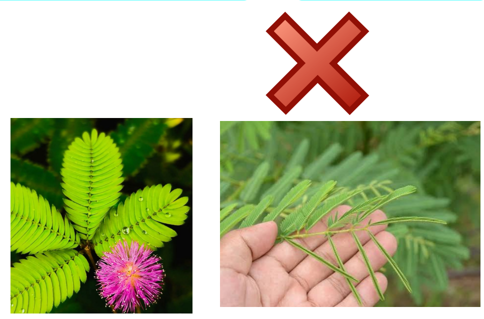

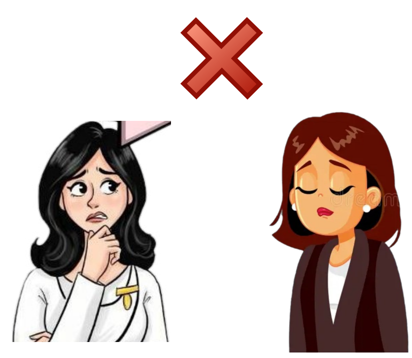

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Method/Process/Instrument

Outcome/Output/Result

21-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- नॉलेज की लाइट-माइट द्वारा अपने लक को जगाने वाले सदा सफलतामूर्त भव

Finale Achievement

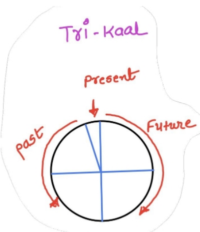

जो बच्चे नॉलेज की लाइट और माइट से आदि-मध्य-अन्त को जानकर पुरुषार्थ करते हैं, उन्हें सफलता अवश्य प्राप्त होती है। सफलता प्राप्त होना भी लक की निशानी है।

नॉलेजफुल बनना ही लक को जगाने का साधन है। नॉलेज (Mind It...) सिर्फ रचयिता और रचना की नहीं लेकिन नॉलेजफुल अर्थात् हर संकल्प, हर शब्द और हर कर्म में ज्ञान स्वरूप हो तब (Then only) सफलतामूर्त बनेंगे।

Very Subtle Point to understand

अगर पुरुषार्थ सही होते भी सफलता नहीं दिखाई देती है तो यही समझना चाहिए कि यह असफलता नहीं, परिपक्वता का साधन है।

m.m.m....imp.

स्लोगन:- न्यारे बनकर कर्मेन्द्रियों से कर्म कराओ तो कर्मातीत स्थिति का अनुभव सहज (Easily) कर सकेंगे।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

21-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ये अव्यक्त इशारे -

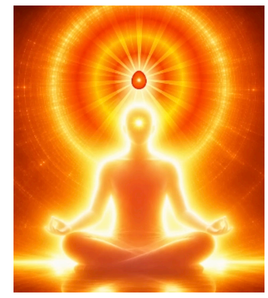

ज्वालास्वरूप स्थिति में रह शक्तिशाली याद का अनुभव करो

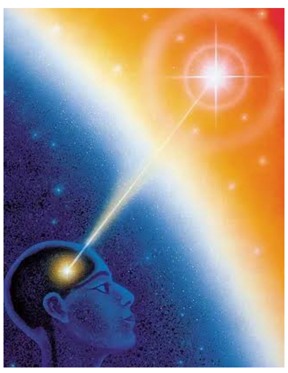

जब योग में बैठते हो तो समाने की शक्ति सेकण्ड में यूज़ करो।

सेवा के संकल्प भी समा जाएं इतनी शक्ति हो जो स्टॉप कहा और स्टॉप हो जाए। फुल ब्रेक लगे, ढीली ब्रेक नहीं।

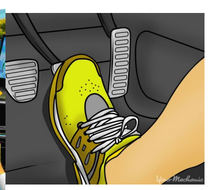

अगर एक सेकण्ड के बजाए ज्यादा समय लग जाता है तो समाने की शक्ति कमजोर कहेंगे।

समझा?

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans जून 26 → Click

All अव्यक्त इशारे जून 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

(इ) सुनने के साथ-साथ स्वरूप बनने में भी शक्तिशाली आत्मायें हो ना? सदैव अपने संकल्पों में हर रोज़ कोई-न-कोई स्व के प्रति और औरों के प्रति उमंग-उत्साह का संकल्प रखो। जैसे आजकल के समय में अख़बार में या कई स्थानों पर ''आज का सुविचार'' विशेष लिखते हैं ना! ऐसे रोज़ मन का संकल्प कोई-न-कोई उमंग-उत्साह का इमर्ज रूप में लाओ और उसी संकल्प से स्व को भी स्वरूप बनाओ और दूसरों की सेवा में भी लगाओ, तो क्या होगा? सदा ही नया उमंग-उत्साह रहेगा — आज यह करेंगे, आज वह करेंगे। जैसे कोई विशेष प्रोग्राम होता है तो उमंग-उत्साह क्यों आता है? प्लॉन बनाते हैं ना — यह करेंगे, फिर यह करेंगे। इससे विशेष उमंग-उत्साह आता है। ऐसे रोज़ अमृतवेले विशेष उमंग-उत्साह का संकल्प करो और फिर चैक भी करो, तो अपनी भी सदा के लिए उमंग-उत्साह वाली जीवन होगी और उत्साह दिलाने वाले भी बन जायेंगे। समझा? जैसे मनोरंजन प्रोग्राम होते हैं, ऐसे यह रोज़ का मन का मनोरंजन प्रोग्राम हो।

(46) करेंगे नहीं, करना ही है। याद रखना, अपने आपही अपना चार्ट रखना और बापदादा ने पहले ही सुनाया है कि हर रात्रि को बापदादा को अपने सारे दिन का चार्ट सुनाने के बाद अपना दिमाग खाली करके सोने से आपको नींद भी अच्छी आयेगी और साथ में रोज़ का हालचाल देने से दूसरे दिन याद रहता है कि बाबा को हमने अपना कहा है, तो वह स्मृति सहयोग देती है। धर्मराजपुरी के लिए जाना नहीं पड़ेगा। दे दिया ना और परिवर्तन कर लिया तो धर्मराजपुरी से बच जायेंगे। अभी दूसरे वर्ष, देखा तो किसने नहीं है लेकिन अभी लक्ष्य रखो, वर्ष को छोड़ो, कम से कम जितने थोड़े समय में अपने को जो बाप की आश है कि चेहरा दिखाई दे, चलन दिखाई दे, वह जल्दी से जल्दी प्रैक्टिकल में करके दिखाओ। बापदादा तो हर बच्चे में निश्चय और हिम्मत का उमंग-उत्साह अभी-अभी देख रहा है। लेकिन जाते-जाते प्लेन में थोड़ा कम नहीं करना। बढ़ाते रहना। दृढ़ संकल्प की चाबी जो बापदादा ने दी है उसको सदा ही कायम रखना। करना ही है, अभी-अभी, गे गे नहीं। वह समय अभी गया। हो जायेगा, होना ही है। हो जायेगा नहीं,

Attention Please..!

होना ही है। डबल पुरुषार्थी का टाइटिल बापदादा ने जो दिया है, उसको सदा याद रखना।

(25.10.2009)